

खोई हुई पेंसिल

माया ने अपनी नानी से मिली हुई, थोड़ी घिसी हुई, चमचमाती गुलाबी पेंसिल को कसकर पकड़ा और अपनी भीड़-भरी कक्षा में दाखिल हुई। यह सिर्फ कोई साधारण पेंसिल नहीं थी; यह उसका शुभंकर था, अनगिनत चित्रों और कहानियों के माध्यम से उसका राजदार। इसकी हल्की सी चमक कक्षा की रोशनी में जगमगाती थी, जो उसे लगातार प्यार और समर्थन की याद दिलाती थी।

सुबह का समय संख्याओं और वर्तनी के सुधार में कब बीत गया, पता ही नहीं चला। दोपहर के भोजन के समय, माया ने खुशी से अपना पेंसिल बॉक्स खोला, अपनी स्केचबुक में कुछ बनाने के लिए तैयार थी। लेकिन उसके हाथ को केवल खाली जगह मिली। उसके सीने में घबराहट फैल गई। चमचमाती गुलाबी पेंसिल गायब थी।

उसका दिल डूब गया। उसने जल्दी से अपना बैग खंगाला, फिर अपने डेस्क के नीचे, फिर अपनी कुर्सी के नीचे देखा। कुछ नहीं मिला। यह हमेशा के लिए खो गई होगी, यह सोचकर उसकी आँखों में आंसू भर आए। उसकी परेशानी देखकर उसके दोस्त भी तलाश में शामिल हो गए, किताबें उठाईं, कोनों की तलाशी ली, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। माया के पेट में निराशा का एक ठंडा सा गोला बन गया। यह सिर्फ एक पेंसिल नहीं थी; यह उसके दिल का एक टुकड़ा थी। दोपहर धीरे-धीरे बीती, हर मिनट उसके नुकसान की भावना को और बढ़ा रहा था।

आखिरी घंटी बजते ही, जैसे ही बच्चे तेजी से बाहर निकल रहे थे, माया

वहीं रुकी रही, आखिरी बार फर्श पर नज़र डाल रही थी। "कुछ ढूँढ़ रही हो?" एक शांत आवाज ने पूछा। माया ने ऊपर देखा तो रोहन, पीछे की कतार का एक लड़का जो शायद ही कभी कुछ बोलता था, उसके बगल में खड़ा था। उसके हाथ में उसने एक जानी-पहचानी चमचमाती गुलाबी पेंसिल पकड़ी हुई थी।

माया हांफ उठी, उसकी आँखें आश्चर्य और राहत से चौड़ी हो गईं। "मेरी पेंसिल!" उसने धीरे से कहा, उसकी आवाज कांप रही थी।

रोहन ने उसे वह दे दी। "मैंने इसे सुबह कला सामग्री के पास पाया था," उसने धीरे से कहा। "यह खास लग रही थी, इसलिए मैंने इसे अपने पास रख लिया। मैंने देखा कि तुम पूरे दिन उदास थीं, लेकिन मैं तुम्हारी कक्षाओं में बाधा नहीं डालना चाहता था।"

जैसे ही उसने उसे पेंसिल दी, माया ने कुछ और देखा। उसकी नोक, जो पहले कुंद थी, अब एकदम तीखी थी। पिछली कला कक्षा से लगा नीला रंग का छोटा सा धब्बा मिट चुका था। रोहन ने इसे सिर्फ ढूँढ़ा ही नहीं था; उसने इसकी देखभाल की थी।

माया के सीने में एक गरमाहट फैल गई, जिसने पहले की उदासी की ठंडक को दूर कर दिया। "धन्यवाद, रोहन," उसने कहा, उसका गला भावनाओं से भर गया था। "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

रोहन ने एक छोटी, शर्मीली मुस्कान दी। "आपका स्वागत है।" फिर वह

चुपचाप चला गया।

अपनी कीमती पेंसिल पकड़े हुए, माया समझ गई कि यह सिर्फ उसके शुभंकर को वापस पाने के बारे में नहीं था। यह एक ऐसे व्यक्ति की अप्रत्याशित दया के बारे में था जिसे वह मुश्किल से जानती थी, एक ऐसी दया जिसने परवाह और करुणा दिखाई थी। यह एक छोटा सा काम था, लेकिन उस पल में, यह बहुत बड़ा महसूस हुआ, जिसने उसे याद दिलाया कि स्कूल के सबसे व्यस्त दिनों में भी, दिल खुले होते हैं और मदद करने को तैयार होते हैं। उसकी पेंसिल की चमक पहले से कहीं अधिक तेज लग रही थी, जो न केवल प्रकाश को, बल्कि मानवीय शालीनता की सौम्य, सुंदर उपस्थिति को भी दर्शा रही थी।